NJESR/January 2019/Volume-1/Issue-1 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2019.1.1.15-22

साहित्य में राष्ट्रवाद

डॉ मोहिनी दहिया
प्राचार्य
माता जीतो जी गर्ल्स कॉलेज, सूरतगढ़, जिला श्रीगंगानगर (राज.)

(Received 1January 2019/Revised 15 January 2019/Accepted 25 January 2019/Published 30January 2019)

राष्ट्रीयता किसी भी राष्ट्र के व्यक्तियों के मध्य एका की भावना होती है, इसमें देशप्रेम, देशभक्ति व देश के प्रति समर्पण की भावना छिपी रहती है और राष्ट्रहित की भावना के आगे वैयक्तिक व सामुहिक हितों को त्याग करने की प्रवृत्ति पाई जाती है, यही भावना राष्ट्रीयता कहलाती है। राष्ट्रीयता की इस भावना को विकसित करने में जाति, धर्म, भाषा,समान राजनीतिक व्यवस्था व आर्थिक कारक का तो योगदान होता ही है इसके उभार में साहित्य की भी बड़ी भूमिका रही है।

"राष्ट्र के प्रति निष्ठा, उसकी प्रगति और उसके प्रति सभी नियम आदर्शों को बनाए रखने का सिद्धांत" ही राष्ट्रवाद है।

राष्ट्रवाद लगाव की वह भावना होती है जो उस सांझी विरासत के प्रति लोगों में होती है और एक राष्ट्रवादी व्यक्ति उस सांझी विरासत से बंधने वाले अपने राष्ट्र को सर्वश्रेष्ठ मानता है। इस प्रकार अपने राष्ट्र, उस सांझी विरासत के प्रति लगाव की भावना ही राष्ट्रवाद है।

स्वामी विवेकानंद जी ने राष्ट्रवाद को आध्यात्मिकता से जोड़ा है। एनीबिसेंट राष्ट्र को एक गंभीर आंतरिक जीवन से स्पंदित आध्यात्मिक सत्ता मानती है। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ें भारत के प्राचीन साहित्य और

Created by Universal Document Converter

उस साहित्य में साकार हुए अतीत में ढूंढ निकाली थी। उनके अनुसार "राष्ट्रवाद एक आध्यात्मिक तत्व है। वह जनता की अन्तरात्मा की अभिव्यक्ति है।'' अतः राष्ट्रवाद का सीधा संबंध राष्ट्र के जनता से जुड़ा हुआ है। और साहित्यकार भी राष्ट्र का एक अंग होता है। वह अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय प्रेम की भावना व्यक्त करते हैं। इसीलिए तो कवियों ने कहा है :–

"जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं
वह हृदय नहीं, पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं"

जब साहित्य और राष्ट्रवाद की बात आती है तो ये दोनों पृथक–पृथक नहीं है। साहित्य के माध्यम से ही भावों का संचार होता है।

भारत में साहित्य सर्जन की परंपरा ऋग्वेद काल से है,और ऋग्वेद में एक मंत्र आया है :– वयं राष्ट्रेः जाग्रेयाम पुरोहितः (नागरिक) अर्थात् नागरिक जो है वह राष्ट्र के प्रति सचेत हो। ऋग्वेद में ये भी बताया गया है कि एक भाव बोध के साथ संम्पृक्त होकर जीना।

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में धरती का यशोगान करते हुए कहा है। "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः (भूमि माता है मैं पृथ्वी का पुत्र हूं)

विष्णु पुराण में तो राष्ट्र के प्रति श्रद्धा का भाव अपने चरमोत्कर्ष पर दिखाई देता है इसमें भारत का यशोगान "पृथ्वी पर स्वर्ग" के रूप में किया गया है।

भागवत पुराण में तो भारत भूमि को संपूर्ण विश्व में "सबसे पवित्र भूमि" कहा है। इस भारत भूमि पर तो देवता भी जन्म लेने के अभिलाषी हैं।

Created by Universal Document Converter

रामायण में भी राष्ट्रवाद का परिचय इसी उदाहरण से मिलता है कि जब मर्यादा पुरुषोत्तम राम वन की ओर जाते हैं, नगर की सीमा को प्रणाम करते हुए कहते हैं "हे पुरियों में श्रेष्ठ अयोध्ये, मैं तुमसे वनगमन की आज्ञा मांगता हूं।" इस कथन में भाव निहित है कि जो राष्ट्र है, मातृभूमि है वो निर्जीव सत्ता नहीं, सजीव ईकाई है।

रामायण में ही रावण वध के पश्चात राम लक्ष्मण से कहते हैं "कपि स्वर्णमयी लंका न में लक्ष्मण रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।" अर्थात् हे लक्ष्मण, यद्यपि यह लंका स्वर्णमयी है तथापि मुझे इसमें रुचि नहीं है क्योंकि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् है। महाभारत में भी राष्ट्रवाद की बात आती है कोरवों की सभा में जब श्री कृष्ण शांति के दूत बनकर जाते हैं और शांति का प्रस्ताव रखते हैं तो दुर्योधन इस शांति प्रस्ताव को ठुकरा देते हैं तो श्री कृष्ण कहते हैं :– यदि एक व्यक्ति के कारण एक कुल की हानि हो तो उस व्यक्ति का त्याग कर देना चाहिए, एक कुल के कारण गांव की हानि हो तो कुल को, और गांव के कारण जनपद को हानि हो तो गांव को, और जनपद के कारण राष्ट्र को हानि हो तो उस जनपद को त्याग देना चाहिए।

बात स्पष्ट है कि यहां भी राष्ट्र को प्राथमिकता दी गई। तो यह स्पष्ट है की अति प्राचीन काल के साहित्य में भी राष्ट्र प्रथम की भावना रही है।

उसके बाद आता है हिंदी भाषा का साहित्य और उसके इतिहास में सर्वप्रथम आदिकाल है। इस काल में भी राष्ट्रीय भावना मौजूद है लेकिन कवियों की रचनाओं में आश्रयदाताओं की प्रशंसा में कवियों की वो आवाज दब गई है। भक्तिकाल में विदेशी आक्रांताओं का आगमन हो चुका था,

Created by Universal Document Converter

उनके दमन और अत्याचार से जनता निराश, हताश थी। तो रचनाकारों ने सांस्कृतिक जागरण का कार्य साहित्य के माध्यम से किया। तुलसीदास जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को इसी रूप में प्रस्तुत किया, जो लोगों के सोए हुए पुरुषार्थ को जगा सके। कबीर दास ने भी जाति–पांति, ऊंच–नीच का जो भेदभाव था उस खाई को पाटने का प्रयास कर, मानव जाति को मानव धर्म का ज्ञान देकर उसके उत्कर्ष की कोशिश की। उनके बिना भारी शक्तियों का प्रतिकार संभव नहीं था।

इस प्रकार आदिकाल (वीरगाथाकाल), भक्ति काल में राष्ट्रवाद सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में कबीर, सूरदास, जायसी, तुलसीदास आदि में प्रकट होता है। तो रीतिकाल में भूषण के माध्यम से (भारतेंदु युग, द्विवेदी युग से छायावाद के दौर में राष्ट्रवाद की भावना और अधिक प्रबल हुई।) रीतिकाल में राष्ट्र सेवा हेतु भूषण की निर्भीक लेखनी चली जिनमें भूषण ने काव्य में राष्ट्रवाद को महत्व दिया। रीतिकाल में भूषण का विशिष्ट स्थान है।

ऐसा कहा जाता है कि भूषण की राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत रचनाओं से मुग्ध हो महाराजा छत्रसाल ने स्वयं भूषण की पालकी को कंधा दिया था। भूषण की ओजपूर्ण रचनाओं को सुनकर किसी भी व्यक्ति के अंदर ऊर्जा आ सकती है।

"इंद्र जिमि जंभपर बांडव सुअंभ पर,
रावण सदंभ पर रघुकुल राज है
पौन बारिवाह पर शंभू रतिनाह पर
ज्यों सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज है।"
तेजतम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर

Created by Universal Document Converter

त्यों म्लेच्छ बंस पर शेर सिवराज है।

उनके पश्चात आधुनिक काल में भारतेंदु, मैथिलीशरण गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी, निराला जी, दिनकर जी, माखनलाल चतुर्वेदी, नरेश मेहता, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि का नाम सर्वोपरि है। तो कथा साहित्य में प्रेमचंद, यशपाल, अमरकांत आदि साहित्यकारों की कृतियां साक्ष्य रूप में प्रस्तुत की जा सकती है।

भारतेंदु जी ने सभी विधाओं में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा

"निज भाषा उन्नति लहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।।

यह भारतेंदु जी का हिंदी के प्रति अनुराग और राष्ट्रवाद का ही परिचायक है। इसी प्रकार भारतेंदु जी ने भारत दुर्दशा पर लिखा।

"रोवहू सब मिली के आवहु भारत भाई..हा..हा.. भारत... "

और आज हम जिस आत्मनिर्भरता की बात करते हैं, वो भारतेंदु जी ने १६ वीं सदी में ही कर दी थी। प्रसिद्ध निबंध "भारत वर्ष की उन्नति कैसे संभव है।" इसमें जिन विषयों को उठाया गया है, वो आज भी प्रासंगिक है।

उनके पश्चात द्विवेदी युग में द्विवेदी जी ने इसके उत्थान में योगदान दिया। आधुनिक साहित्य का यही युग राष्ट्रवाद का शंखनाद करता है। इसी युग में राष्ट्रवाद का स्वर ओर परिष्कृत होकर मजबूत व संगठित होकर सुनाई देती है। राष्ट्रकवि गुप्त ने सभी भारतीयों को जागृत करने के लिए "भारत – भारती" की रचना की और कहा :––

"हम कौन थे क्या हो गए, क्यों होंगे अभी।

Created by Universal Document Converter

आओ मिलकर विचारे ये समस्याएं सभी।।"

इसमें यह उद्घोष है कि अरे अपने अतीत को देखो कितना गौरवशाली है, उसके आधार पर वर्तमान का निर्माण करो। निराशा से कुछ नहीं होगा। गुप्तजी ने भारत के गौरवमय अतीत का चित्रण करते हुए लिखा है

"भू–लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्यलीला स्थल कहां है ? सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कृर्ष है ? उसका की जो ऋषि भूमि है। वह कौन ? भारतवर्ष है।"

छायावाद जो स्वर्णकाल है। छायावादी कवियों में निराला की कविताओं एवं विचारों में सर्वप्रथम राष्ट्रवादी चिंतन प्रकट होता है। ये अतीत के गौरव के साथ वर्तमान दुर्दशा का चित्रण करते हुए राष्ट्रवाद की संकल्पना को अभिव्यक्ति देते हैं। – यथा – "दिल्ली" कविता में

"क्या यह वही देश है... भीमार्जुन आदि का कीर्ति क्षेत्र।"

प्रसाद ने ऐतिहासिक नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को प्रकट किया है। जैसे चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी आदि नाटक में यथा कार्नेलिया की पंक्तियां –

"अरुण यह मधुमय देश हमारा जहां पहुंच अनजान क्षितिज का मिलता एक सहारा।"

जब हम कामायनी पढ़ते हैं। जब सृष्टि का अवतरण हुआ और मनु का अवतरण हुआ मनु पूछते हैं कि चारों ओर जल ही जल है मुझे क्यों यहां भेजा गया है, मेरा कर्तव्य क्या है, दायित्व क्या है? तो प्रसाद जी मनु का कर्तव्य बोध कराते हुए बताते हैं कि –

Created by Universal Document Converter

"औरों को हंसते देखो मनु हंसो और सुख पाओ। अपने सुखों को विस्तृत कर लो जग को सुखी बनाओ।।"

जग को सुखी बनाने का जो भाव है वास्तव में वही भारत की राष्ट्रीयता का बोध है, नए संदर्भ में इसे राष्ट्रवाद कहा जाता है।

प्रेमचंद जी ने अपने दौर में यथार्थ की बात की लेकिन उम्मीद देने से भी नहीं चूके। उनके लेखन का मार्ग आदर्शोन्मुख यथार्थ था। यथार्थ की चरम रचना है – "कफ़न" उसमें भी उन्होंने यथार्थ को नहीं छोड़ा। भारतीय समाज में परंपरा है कि परिवार जब छोड़ देता है तो समाज उसे संभाल लेता है। इसी प्रकार "गोदान" में भी यथार्थ का नग्न चित्रण नहीं बल्कि समाधान भी प्रस्तुत करता है। ये नहीं कि पाठक यथार्थ पढ़कर चिंता में डूब जाए।

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के दो स्वरूप देखे जा सकते हैं। प्रथम आजादी के पूर्व की भारत की स्थिति और द्वितीय आजादी के पश्चात् की। जहां पूर्व में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक स्वरूपों, मूल्यों, असंवेदनाओं पर आधारित है। लोगों का आजादी के प्रति सोच एवं शोषण, अत्याचार, लूटमार आदि के विरोध में राष्ट्रीय चेतना का संचार करते हैं। आजादी को प्राप्त करने में हमारे महापुरुषों, क्रांतिकारियों ने त्याग और बलिदान से निर्मित जिस तरह के राष्ट्र निर्माण की कल्पना की थी आजादी प्राप्त होने के पश्चात हमारे राजनेताओं में ध्वस्त होते मूल्यों, राजनीति के बदलते छद्म स्वरूपों। आजादी के प्रति कल्पित मूल्यों में गिरावट की वजह से रचनाकारों के विषय शिल्प एवं संवेदनाओं में भी बदलाव आया। इस दौर में नागार्जुन, मुक्तिबोध, अग्रवाल, त्रिलोचन तथा आगे चलकर धूमिल, शमशेर बहादुर सिंह, आदम गोंडवी, रघुवीर जैसे

Created by Universal Document Converter

अनेक रचनाकारों ने राष्ट्र की समकालीन परिस्थितियों को अपनी कलम से मुखरित किया।

राष्ट्रीय चेतना के समृद्ध कवियों में बालकृष्ण शर्मा नवीन जी का नाम भी सम्मान के साथ लिया जाता है। जो स्वतंत्रता सेनानी एवं प्रसिद्ध क्रांतिकारी गणेश शंकर विद्यार्थी के अभिन्न मित्र थे।

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल–पुथल मच जाये। एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से...."

अतः उपरोक्त विवेचनोपरांत स्पष्ट हो जाता है कि भारत का राष्ट्रवाद समझने से पूर्व भारत के प्रति अपनत्व और भक्ति का भाव रखना पड़ेगा। और मनुष्यता का बोध रखना पड़ेगा क्योंकि भारत की संकल्पना राष्ट्रवाद के संवर्द्धन पर टिकी है। जहां तक बात साहित्य की है तो प्रत्येक देश का साहित्य अपने देश की भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों से जुड़ा होता है। साहित्यकार अपने देश की अतीत से प्राप्त विरासत पर गर्व करता है, वर्तमान का मूल्यांकन करता है और भविष्य के लिए रंगीन सपने बुनता है और इस प्रकार कहा जा सकता है कि वह राष्ट्रीय आकांक्षाओं से परिचालित होता है। साहित्य ने राष्ट्रवाद के विकास में अहम भूमिका निभाई है। अंततः

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है
वो नर नहीं है पशु निरा है, और मृतक समान है।।"

Created by Universal Document Converter